B.A.Law 4th Sem.

विषय -- हिन्दी
ईकाई -1
पाठ - भाषा कौशल
व्याख्यान शीर्षक -- अविकारी शब्द का आशय तथा उसके प्रकार
प्रस्तुति- वंदना कुशवाह

अविकारी शब्द - वे शब्द जिनमे लिंग, वचन, पुरुष, कारक ,काल आदि के कारण कोई परिवर्तन (विकार) नही होता है, वे शब्द अव्यय या अविकारी कहलाते है । ये सदैव अव्यय , अपरिवर्तित, अविकारी रहते है । अव्यय का अर्थ ही है, जिसमे कोई व्यय न हो । यानी मूल रूप मे रहते है कभी बदलते नही है । वैसे तो इनके चार भेद है, पर कई- कई विद्वान निपात को इनमे शामिल कर इनकी संख्या पाँच मानते है ।
इनके भेद निम्नानुसार है -
(अ) क्रिया विशेषण
(ब) संबंधबोधक
(स) सम्मुचयबोधक
(द)विस्मयादिबोधक
(ई)निपात
(अ) क्रिया विशेषण - ऐसे शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते है, उन्हे क्रिया विशेषण कहते है ।जैसे- अनीता मंद-मंद मुस्करा रही है । (मुस्कराना क्रिया है और मंद मंद विशेषता)
क्रिया विशेषण के भेद -
(1) परिणामवाचक- जो क्रिया की मात्रा का बोध कराते है । जैसे - बहुत ,थोड़ा, केवल, इतना, कुछ ,कम ,खूब आदि ।
(2)रीतिवाचक - वे शब्द जो क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध कराते है, जैसे - सहसा, धीरे-धीरे, तेज ,यथासंभव
(3) स्थानवाचक- वे शब्द जो क्रिया के स्थान का बोध कराते है जैसे - यहाँ, वहाँ, भीतर , ऊपर, दाएं, बाएं , सर्वत्र ।
(4)कालवाचक- क्रिया के समय का बोध कराने वाले शब्द । जैसे - आज ,कल, परसो
(5) कारणबोधक - जो क्रिया के कारण को प्रकट करते हो, जैसे - अतः, इस तरह , इस प्रकार
(6)स्वीकारबोधक - जो क्रिया की स्वीकृति का बोध कराए जैसे - अवश्य ,बहुत अच्छा
(7) निषेधवाचक - जो क्रिया के निषेध को प्रकट करे, जैसे - मत ,नही ,न
(8) प्रश्नवाचक - जिससे क्रिया के प्रश्न का बोध हो जैसे - कब ,कैसे
(9) निश्चयवाचक -जो क्रिया के निश्चय को प्रकट करते हो जैसे - वास्तव मे, असल मे
(10)अनिश्चयवाचक - शायद, संभवतः आदि ।

(ब) संबंधबोधक - वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम से मिलकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्द से दिखाते है । इनके पहले किसी न किसी परसर्ग की अपेक्षा रहती है । ये दस प्रकार के है -
(1)कालवाचक -- आगे ,पीछे, पहले, उपरांत

(2) स्थानवाचक -- निकट, यहां, भीतर ,सामने
(3)दिशावाचक -- तरफ ,ओर , आसपास
(4) समतावाचक -- योग ,तुल्य, बराबर ,समान
(5) साधनवाचक -- माध्यम, सहारे ,द्वारा
(6) विषयवाचक -- संदर्भ, बाबत
(7) विरुद्धवाचक -- उलटे ,विरूद्ध, खिलाफ
(8) संगवाचक -- सहचर, साथ ,संग
(9) हेतुवाचक -- कारण , इसलिए, के लिए, वास्ते
(10) तुलनावाचक -- अपेक्षा, बेहतर, समान
(स) समुच्चयबोधक - दो शब्दो, वाक्यांशो अथवा वाक्यो को जोड़ने वाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते है ।इन्हे योजक भी कहते है, जैसे - यदि, या, और ,फिर, किन्तु, तथा,अथवा आदि ।
यह मूलतः दो प्रकार के होते है -
(1) समानाधिकरण---- जो अव्यय दो या दो से अधिक समान पदो, उपबंधो को जोड़ता है । इसके पुनः चार भेद है -

संयोजक -- तथा, एवं ,और
विभाजक-- नही ,तो , अथवा, या
निरोधदर्शक -- लेकिन, किन्तु ,परन्तु, मगर
परिणाम दर्शक -- अतः , अतएव, इसलिए

(2) व्यधिकरण ---- जो अव्यय किसी वाक्य के एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य को जोडता है ।इसके भी चार भेद है --

कारणवाचक -- जो कि ,इसलिए कि, क्योकि
उद्देश्यवाचक ---ताकि ,कि, जो
संकेतवाचक --- यद्यपि ,तथापि ,यदि
स्वरूपवाचक --- अर्थात् जो कि ,यानी

(द) विस्मयादिबोधक --वे शब्द जो आश्चर्य ,हर्ष ,घृणा, शोक ,प्रशंसा, प्रसन्नता, भय आदि भावो का बोध कराए । इनके भेद----
(1)आश्चर्यबोधक -- सच ,ओहो, ऐ ,अरे
(2)शोकबोधक -- आह, हाय, हे राम
(3) हर्ष बोधक -- धन्य, वाह, अहा
(4)प्रशंसा बोधक -- वाह, शाबाश, अति सुन्दर
(5) क्रोध बोधक -- अरे
(6)भय बोधक --हाय , ओ
(7) चेतावनी बोधक --बचो, सावधान
(8) घृणा बोधक -- छिं छि , उफ, थू थू
(9)इच्छा बोधक --काश
(10) संबोधन बोधक --हे ,अरे
(11)अनुमोदन --ठीक, हाँ, अच्छा

(12) आशीर्वाद --यशस्वी भव ,खुश रहो

(ई) निपात --वाक्य मे जो अव्यय किसी शब्द या पद के बाद लगकर उसके अर्थ मे विशेष प्रकार का बल या भाव पैदा करते है या उसमे सहायता करते है, उन्हे निपात कहते है ।
इनका प्रयोग भी मूलतः अव्ययो के लिए ही होता है ।इनका कोई लिंग वचन नही होता । निपात के प्रयोग से निश्चित शब्द या पूरे वाक्य को अन्य भावार्थ प्रदान करने मे सहायता मिलती है ।ये सहायक शब्द होकर भी वाक्य के अंग नही होते है ।इनका कार्य शब्द समूह को बल प्रदान करना है । इनके भेद -
स्वीकृतिबोधक- जी, हाँ ।नकारबोधक - नही। प्रश्नबोधक- क्या । आदरबोधक- जी ।

----------'×----------